अङ्क-२६
जुलाई-दिसम्बर २०१५

वेदविद्या
ISSN-2230-8962

ऋग्वैदिक सोम एवं अवेस्तीय हओम : एक तुलनात्मक अध्ययन

मणि शंकर द्विवेदी

ऋग्वेद आर्य साहित्य का प्राचीनतम ग्रन्थ है,जिसमें वैदिक ऋषियों के चिन्तन की पराकाष्ठा परिलक्षित होती है । यह ज्ञान-विज्ञान का पारावार है । यह भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल स्रोत है । ऋग्वैदिक ऋषियों ने प्रकृति से तादात्म्य स्थापित करने हेतु विभिन्न देवताओं की कल्पना की जिन्हें तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है-

१. द्युलोकस्थानीय :- इनमें सूर्य, सविता, विष्णु, वरुण, मित्र, आश्विन और उषा प्रधान हैं ।

२. अन्तरिक्षस्थानीय :- इनमें इन्द्र,अपानपात, पर्जन्य और रुद्र मुख्य हैं ।

३. पृथ्वीस्थानीय :- इसमें अग्नि, बृहस्पति और सोम विख्यात हैं ।

जिस प्रकार ऋग्वेद में विभिन्न देवताओं का वर्णन है उसी प्रकार अवेस्ता (ईरानी आर्यों का धर्मग्रन्थ) में भी अनेक देवताओं का वर्णन मिलता है जो ऋग्वैदिक देवताओं से पर्याप्त साम्य रखते हैं । उन देवताओं में सोम का नाम प्रमुख है जो ऋग्वेद एवं अवेस्ता दोनों में एक प्रमुख देवता के रूप में प्रतिष्ठित है । जहाँ ऋग्वेद के अन्यान्य सूक्तों के साथ पवमान मण्डल नामक नवें मण्डल में सोम का विस्तृत वर्णन मिलता है वही अवेस्ता के नवें, दशवें एवं ग्यारहवें यस्न में हओम (सोम) का पर्याप्त वर्णन किया गया है ।

प्रस्तुत शोधपत्र के माध्यम से ऋग्वैदिक सोम एवं अवेस्तीय हओम का स्वरूप उसकी उत्पत्ति-प्रक्रिया, सामर्थ्य, कार्य एवं अन्य देवताओं के साथ उसके सम्बन्ध को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

सोम एवं हओम का स्वरूप एवं उत्पत्ति-प्रक्रिया

सोम – ऋग्वेद के पृथ्वीस्थानीय देवताओं में सोम का महत्त्वपूर्ण स्थान है । ऋग्वेद के १२० सूक्तों में इनकी स्तुति की गई है जिनमें से ११४ सूक्त नवें मण्डल में एवं अन्य ६ सूक्त अन्य मण्डलों में हैं । ऋग्वेद में सोम एक लता के रूप में प्रसिद्ध है जिसके रस का पान करके देवता लोग आनन्द की अनुभूति करते हैं । नवें मण्डल का प्रथम सूक्त सोम के स्वरूप को बतलाते हुए कहता है कि वह अतीव स्वादिष्ट एवं मद प्रदान करने वाला है-

स्वदिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ।[१]

---

[१] ऋग्वेद, ९/१/१

सोम का शारीरिक विग्रह इन्द्र और वरूण की अपेक्षा बहुत कम विकसित हुआ है क्योंकि कवियों के सामने उसका वास्तविक रूप सदैव उभरा रहता था । सोम उस प्रसिद्ध पौधे का नाम है जिसका वैदिक यज्ञों के समय समर्पित सोम- हवि का निर्माण करने के लिए किया जाता था । सोम को बहुधा एक हरे रंग का लता बतलाया गया है लेकिन कहीं-कहीं उसे बभ्रु (भूरा) एवं अरुण रंग का भी बतलाया गया है । इसके अङ्कुर को अंशु एवं समस्त पौधे को अन्धस् कहा गया है । पाषाणों द्वारा सोम का सवन किया जाता था ।[१] इसके पश्चात् इसे ऊनी छलनी में से छानकर दारू-पात्रों को एकत्रित किया जाता था जहाँ इसे देवताओं के लिए बर्हि पर पेय के रूप में उपस्थित किया जाता था । इसे अग्नि में भी डालते थे और पुरोहित लोग इसे पीते भी थे । जिस पत्थर पर सोम का सवन किया जाता था उसे ग्रावन[२] अथवा अद्रि[३] कहा जाता था । देवताओं को जिन पात्रों में सोमरस समर्पित किया जाता था उसे चमू[४] और पुरोहितों द्वारा सोमपान के लिए प्रयुक्त पात्रों को कलश और चमस् कहा जाता था । जिस चर्म पर टहनियों को रखा जाता था उसे त्वच[५] अथवा गो (गो-चर्म)[६] कहा गया है ।कोश, सधस्थ, वन, द्रोण, ये सभी सोम-पात्रों के विभिन्न नाम हैं । सोमरस को छलनी से छानकर कलश या द्रोण मे एकत्रित कर उसे जल और दूध के साथ मिश्रित किया जाता था जिससे वह मीठा बन जाता था ।मिश्रित सोम के तीन रूप दृष्टिगोचित होते हैं- गवाशिर,दध्याशिर और यवाशिर । इस मिश्रण का अलङ्कारिक रूप से वासस्, अत्क या निर्णिज्[७] इन शब्दों से वर्णन किया गया है । सोम का सेवन दिन मे तीन बार किया जाता था । ऋभुओं को सायं सेवन में [८], इन्द्र को माध्यन्दिन सेवन में आमन्त्रित किया गया है[९] जबकि प्रातः सएवन इन्द्र का प्रातराश है ।[१०] इन्द्र के लिए प्रातः सेवनार्थ सोम का दिग्दर्शन निम्न मन्त्र के माध्यम से किया जा सकता है-

इन्द्र पिब प्रतिकामं सुतस्य प्रातः सावस्तव हि पूर्वपीतिः ।
हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रूनुक्थेभिष्टे वीर्या३प्र ब्रवाम ॥[११]

---

[१] ऋग्वेद, ९/६७/१९
[२] ऋग्वेद, १/८३/६
[३] ऋग्वेद, ५/४५/७, ९/११/५, १०/७६/२
[४] ऋग्वेद, ९/९९/८, १०/९१/१५
[५] ऋग्वेद, ९/६५/२५
[६] ऋग्वेद, ९/११६/४
[७] ऋग्वेद, ९/१४/५
[८] ऋग्वेद, ४/३३/११
[९] ऋग्वेद, ३/२१/१
[१०] ऋग्वेद, १०/११२/१
[११] ऋग्वेद, १०/११२/१

सोम के लिए मौञ्जवत्, वनस्पति, वाचस्पति, विश्वचर्षणि, रक्षोहा, वृत्रहन्तम्, महिष्ठ, अमर्त्य, सहस्त्रधार, इन्द्रपीत, पवमान, मधुमान, अमृत, शुद्ध, शुक्र, शुचि, औषधिपति, इत्यादि उपाधियों का प्रयोग किया गया है ।

सोम के किसी पर्वत पर उत्पन्न होने और निवास करने का अनेकशः उल्लेख है ।परन्तु उसकी वास्तविक उत्पत्ति स्वर्ग में माना गया है । सोम स्वर्ग का शिशु है । सोमरस की उत्पत्ति के विषय में बताते हुए ऋषि कहते हैं कि इन्द्र आदि देवताओं को पीने के लिए यह सोम अभीष्ट वर्षक, देवकाम्य और असुरहन्ता होते हुए छन्ने में गिरते हुए निष्पन्न होते हैं । सर्वद्रष्टा सोम शब्द करते हुए द्रोणकलश में क्षारित होते हैं । यह क्षरणशील सोम स्वर्ग के प्रकाशक बनते हुए मेषलोम निर्मित छन्ने को पार कर गिरते हैं --

स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति । विघ्नन्रक्षांसिदेवयुः ।
स पवित्रे विचक्षणो हरिर्हर्षति धर्णसिः । अभि योनिं कनिक्रदत् ।
स वाजी रोचना दिवः पवमानो वि धावति । रक्षोहा वारमव्ययम् ।[१]

ऋग्वेद के अनुसार यह सोम स्वर्ग से पृथ्वी पर श्येन पक्षी के द्वारा लाया गया है –

ऋजीपी श्येनो ददमानो अंशुं परावतः शकुनो मन्द्रं मदम् ।
सोमं भरदाददाणो देवावान्द्रिवो अमुष्मादुत्तरादादाय ॥[२]

हओम - अवेस्तीय हओम अवेस्ता के यस्न भाग में अतिचर्चित है । यस्न- ९-११ हओम-यस्त कहलाता है जिसमे इसका विस्तृत वर्णन किया गया है । हओम हु = सु अर्थात् अभिषुत करना, निचोड़ना से निष्पन्न पद है । अवेस्ता मे हओम का एक लता के रूप मे वर्णन मिलता है । उसे अषव = ऋतावा बतलाया गया है तथा वह दूरओष = मृत्युविदारक है- **"हओमो अषव दूरओषो "**[३] यह बएशज = भैषज्य है , उसकी भैषज्यता अनेकशः कथित है ।[४] हओम नाम्याशु = नम्रांशु अर्थात् कोमल झुके पल्लव वाला है । हुखतु = सुक्रतु अर्थात् सुन्दर मेधिर है । जइरि,जइरिगओन = हरि, हरिगुण, हरिद्वर्ण एवं स्वर्णवर्ण है । यह अनृतावा पर वधर् का प्रक्षेप करता है ।[५] इससे शरीर की तन्दुस्ती तथा आत्मा के दीर्घजीवन की कामना की जाती है । यह अविवाहित कन्यायों के लिए वरप्रदान करता है ।[६]

---

१ ऋग्वेद, ९/३७/१, २, ३
२ ऋग्वेद, ४/२६/६
३ अवेस्ता, यस्न, ९/२, ३, ७
४ अवेस्ता, यस्न, ९/१७, १०/९, १०/१२
५ अवेस्ता, यस्न, ९/३१
६ अवेस्ता, यस्न, ९/२३

हओम का उत्पत्ति स्थान पर्वत भूमि है । इसे हरिद्वर्ण, पर्वतजात, वर्षाजात, मेघसिञ्चित कहा गया है- **"स्तओमि मेघम्च वारम्च या ते कहपम् वक्षयतो वर्ष्नुश् पइति गइरिनाम् ।"**[१] इस हओम का प्रसारक पक्षी है जो इसके रक्षक देवता के पास से लाकर पर्वत से पर्वत पर फैलाया, पर्वत से पर्वतशिलाओं पर बिखेरा तथा पर्वतशिलाओं से पर्वतघाटियों में छींटा । पक्षियों ने ही इसे गर्तों, समभूमीयस्थलों, उपवनभूमियों, अधित्यकाओं एवं उपत्यकाओं मे पहुँचाया ।यह लघु उपवन भूमियों का शोभाधायक माना है । निम्न गाथा के माध्यम से हओम के उत्पत्तिस्थल की जानकारी प्राप्त होती है-

स्तओमि ज़ाँम् परथ्वीम् पथनॉम्
वॅरॅज्यङ्ह्वॉम् ख्वापरॉम्
बरॅथ्रीम् ते हओम अषाउम् ।
स्तओमि जॅमो यथा रओधहे
हुबओइधिश अउर्वो चरानॅम्
उत् मज्दो हुरूथ्म ।
हओम रओसे गर पइति
उत् फ्राधअष विष्पथ
हाइथीमच् अषवे ख्रा। अहि ।[२]

अर्थात् हे सोम! मैं विशाल, विस्तृत, ऊँची, भोज्यपदार्थयुता तुझे धारण करने वाली ऋतावरी ज्मा की स्तुति करता हूँ जहाँ तुम उगते हो, सुगन्धयुक्त हो, शीघ्र फैलने वाले हो, असुरमेधा की शोभनवृद्धि से युक्त हो । हे सोम! तुम पर्वत पर उगते हो, और पक्षियोम् के मार्गोंमें प्रवृद्ध होते हो, सचमुच तुम ऋत के स्रोत हो।

सोम एवं हओम के कार्य एवं सामर्थ्य

सोम :- ऋग्वेद में सोम को अमरता प्रदान करने वाला दिव्य पेय कहा गया है । यह एक ऐसा प्रेरक पेय है जिस पर देवता तक मरते हैं । इसे पीकर वे आनन्द में लीन हो जाते हैं । इसमें भैषज्य शक्ति भी है । यह रोगियों को उपचार करता है । अन्धों को दृष्टि और लंगडों को गति प्रदान करता है । यह मनुष्यों का अङ्गरक्षक है तथा उनके अङ्ग-अङ्ग में व्याप्त है । यह वाणी में भी प्राण डाल देता है अतः

[१] अवेस्ता, यस्न, १०/३
[२] अवेस्ता, यस्न, १०/४

इसे वाचस्पति[१] भी कहा गया है । यह सूक्तों का जनक, कवियों का मूर्धन्य है[२], पुरोहितों में द्रष्टा, ऋषियों का निर्माता[३], स्तोत्रों का रक्षक[४], यज्ञ की आत्मा तथा देवों मे ब्रह्मा है । यह स्वयं एक मेधावी ऋषि[५] है ।

सोम देवताओं के जन्मस्थान को पहचानता है और विवेक के साथ प्राणियों का निरीक्षण करता है, अतः यह भूरिचक्षु[६] और सहस्त्रचक्षु[७] है । इसने पितरों को कार्य करने के लिए प्रेरित किया था । इसी के द्वारा पितरों ने प्रकाश और गौएँ प्राप्त की थी । यह पितरों से जुडा हुआ है तथा उनके साथ रहता है-

"त्वं सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथ्वी आ ततन्थ।
तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम ॥"[८]

सोम की मादक शक्ति का मुख्य उपयोग इन्द्र को अन्तरिक्षस्थ शत्रुदल के विरुद्ध लोहा लेने के लिए बढावा देना है । वृत्र के साथ युद्ध में प्रवृत्त हुए इन्द्र के साथ निकट रूप से सम्बद्ध होने के कारण इसे स्वतन्त्र रूप से भी एक योद्धा कहा गया है । यह अजेय, योद्धाओं का अग्रणी, भीमों मे सबसे बढकर तथा विनयशील है । यह पृथ्वी और स्वर्ग का अशेष धन, भोजन, पशु, अश्व आदि अपने उपासकों को देता है । यह शत्रुओं से हमारी रक्षा करता है[९] तथा यातुधानों को ध्वस्त करता है[१०] । औषधियों में सर्वश्रेष्ठ होने के कारण इसे वनस्पतियों का राजा बनकर उत्पन्न हुआ भी बताया गया है , अतः इसके लिए वनस्पति विशेषण का प्रयोग किया गया है । यह सरिताओं का राजा है, सम्पूर्ण पृथ्वी का अधिपति है, देवताओं का राजा और पिता है तथा मर्त्यों एवम् ब्राह्मणों का राजा है ।

इस प्रकार ऋग्वेद के नवें मण्डल के अनेक सूक्तों द्वारा सोम की असीम शक्ति का परिचय एवं उसके महत्वपूर्ण कार्यों का वर्णन प्राप्त होता है ।

हओम :- अवेस्तीय हओम दिव्यातिदिव्य है । यह दिव्यगुण संयुक्त है । यह दिव्यता की प्रतिमूर्ति है । यह साक्षात् देवस्वरूप है । हओम की दिव्यता को प्रदर्शित करने के लिए ही उसे "ह्ओम न्मानिपइते वीस्पइते जन्तुप इते दञ्हुपइते स्पनङ्ह वएध्यापइते"[११] कहा गया है । हओम के दिव्यता के

---

१ ऋग्वेद, ९/२६/४
२ ऋग्वेद, ९/४६/६
३ ऋग्वेद, ९/९६/१८
४ ऋग्वेद, ६/५२/३
५ ऋग्वेद, ८/७९/१
६ ऋग्वेद, ९/२६/५
७ ऋग्वेद, ९/६०/१
८ ऋग्वेद, ८/४८/१३
९ ऋग्वेद, १०/२५/७
१० ऋग्वेद, ९/५९/५
११ अवेस्ता, यस्न, ९/२७

अभिधायक कुछ विशेषण द्रष्टव्य हैं- अषव = ऋतावा (यस्न - ९.२), दूरोष = दूरौषः (यस्न - ९.२), अषवजो = ऋतावहा (यस्न - १०.१), हुकॅरॅफ्श = सुकृप (यस्न - ९.१६), अशधातो = ऋतहितः, वङ्हुस्= वसु (यस्न - ९.१६) इत्यादि । हओम सर्वसुखप्रदाता है । यह पारलौकिक सुखदाता है । दिव्यता की प्राप्ति के लिए इसके प्रति अनेकशः प्रार्थनाएँ प्राप्त हैं । स्वयं जरथुष्ट्र(पारसी धर्म का प्रवर्तक) ने हओम से ध्रुवाङ्गता की याचना, दीर्घजीविता की प्रार्थना तथा उत्साह की कामना की है । यह मादकतादायी, बुद्धिमत्ताप्रदायी तथा स्ववशित्वदायी है ।[१] यह पुत्र की याचना करने वाले को पुत्र प्रदान करता है । इसने सोमसावी विवस्वान् को यमक्षयतरूपपुत्र प्रदान किया ।[२] इसने सोमोपासक आथ्व्य को त्रैतानरूपपुत्र दिया ।[३] त्रित् को ऊर्वाक्षय तथा कृशाश्व नामक दो पुत्र प्रदान किया ।[४] इसने पुर्वश्व को असुरचिकेता जरथुष्ट्ररूप पुत्र दिया ।[५]

हओम सकरूण एवं अभयप्रद है । यह मानवों के लिए विविधवरदायी है ।दीर्घकाल तक अविवाहित कन्याएँ इससे वरप्राप्त्यर्थ प्रार्थिनी हैं । यह प्रार्थना करने पर उन्हें अभीष्ट पति प्रदान करता है ।[६] यह एक ओर जहाँ करूण, सहृदय एवं अभयवरद है, वही दूसरी ओर भक्त की प्रार्थना पर शत्रुघ्न भी है ।[७] इस प्रकार यस्न ९, १० एवं ११ के अनेक गाथाओं मे हओम के असीम सामर्थ्य एवं उसके कार्यों का विस्तृत वर्णन किया गया है ।

सोम एवं हओम का अन्य देवताओं से सम्बन्ध

ऋग्वेद के अनेक सूक्तों मे स्वतन्त्र रूप से सोम का वर्णन होने के साथ साथ इसका इन्द्र,अग्नि,मरूद्गण,इन्दु एवं सूर्य के साथ भी वर्णन मिलता है । लगभग छः सूक्तों में सोम इन्द्र, अग्नि,पूषा और रूद्र के साथ देवतायुग्म के रूप में आता है । कभी कभी यह इन्द्र के मित्र मरूद्गणों के साथ भी आता है । मरूद्गण इसको दूहते हैं और नवजात शिशु को अलङ्कृत करते हैं -

शिशुं॑ जज्ञा॒नं ह॑र्य॒तं मृ॑जन्ति शुम्भन्ति॒ वह्नि॑ म॒रुतो॑ ग॒णेन॑ ।
क॒विर्गी॒र्भिः काव्ये॑ना क॒विः सन्त्सोमः॑ प॒वित्र॒मत्ये॑ति॒ रेभ॑न् ॥[८]

---

[१] अवेस्ता, यस्न, ९/१७, १९
[२] अवेस्ता, यस्न, ९/४
[३] अवेस्ता, यस्न, ९/७
[४] अवेस्ता, यस्न, ९/७
[५] अवेस्ता, यस्न, ९/१३
[६] अवेस्ता, यस्न, ९/२३
[७] अवेस्ता, यस्न, १०/१९
[८] ऋग्वेद, ९/९६/१७

जहाँ तक अवेस्तीय हओम की अन्य देवताओं से सम्बन्ध की बात है तो यहाँ हओम अन्य देवताओं से उस प्रकार सम्बद्ध नही दिखायी देता है जिस प्रकार ऋग्वैदिक सोम अन्य देवताओं से सम्बद्ध है ।

उपसंहार :-

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्पष्टतया ऋग्वैदिक सोम एवं अवेस्तीय हओम में पर्याप्त साम्य दृष्टिगोचित होता है । भारत-ईरानी काल में सोम और हओम के सवन और स्तवन मुख्य विशेषता रही है । ऋग्वेद और अवेस्ता दोनों में कहा गया है कि सोम के डण्ठल कुचले जाते थे । सोमरस पीतवर्ण या हरितवर्ण का होता था जिसे दूध या पानी मे मिलाया जाता था । दोनों के अनुसार सोम पर्वतों पर उत्पन्न होता था । दोनो ही मे सोम वनस्पति है । दोनों में यह एक औषधिविशेष है जो स्वास्थ्य और दीर्घजीवन प्रदान करती है और मृत्यु का निवारण करती है। दोनो में सोम का गाथेय घर स्वर्ग है जहाँ से इसे पृथ्वी पर लाया जाता है । दोनों मे पेय सोम एक शक्तिशाली राजा बन जाता है और वह देवत्व को प्राप्त होता है ।इस प्रकार यद्यपि ऋग्वैदिक सोम का स्वरूप जितना विस्तृत रूप से ऋग्वेद में वर्णित है उतना विस्तृत वर्णन अवेस्ता में हओम का नहीं है तथापि इन दोनों में अनेक समानताएँ विद्यमान हैं जो इन दोनों के एक होने का समर्थन करती हैं ।

मणि शंकर द्विवेदी
शोधच्छात्र
विशिष्ट संस्कृत अध्ययन केन्द्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली-६७